FREE LIBRARIES NETWORK
India & South Asia

फ्री लाइब्रेरीज ज़िंदाबाद

नेटवर्क समाचार का त्रैमासिक दौर

अंक **2** अप्रैल **2022**- जून **2022**

सभी का स्वागत है

पुस्तकालय सबसे सुरक्षित स्थान है जिसे हम जानते हैं। क्या हम बार-बार पुस्तकालय जाना पसंद करते हैं**?** पुस्तकालय पाठक का क्यों होता है और उनका अपना क्यों हो जाता है**?** एक पुस्तकालय आपके स्वागत के लिए अपने दिल के द्वार खोलता है और बाहरी दुनिया को देखने के लिए एक खिड़की खोलता है।

क्यामेरे पुस्तकालय का पाठक मेरे पुस्तकालय में स्वागत और सुरक्षित महसूस करता है**?** स्वागत करने और एक सुरक्षित स्थान बनाने के लिए हम एक सिद्धांत का पालन करते हैं, यानी सभी का स्वागत है और हम सभी **"**प्यार से**"** या **"**मोरोमेयर**" (**प्यार के साथ**)** सभी का स्वागत करते हैं। एफ.एल.एन के पुस्तकालयाध्यक्ष प्यार से सभी का स्वागत करने में विश्वास रखते हैं। इन आसान शब्दों का अर्थ है पदानुक्रम को तोड़ना और हर किसी का वैसे ही स्वागत करना जैसे वे हैं। एक पुस्तकालय वास्तव में एक समावेशी स्थान तब होता है है जब एक पाठक को उनकी शिक्षा, लिंग, जाति, धर्म, वर्ग, नस्ल, क्षमता, लैंगिकता आदि के आधार पर पहुंच से वंचित नहीं किया जाता है। साथ ही एक पुस्तकालय बच्चों की सुरक्षा के लिए नीतियां बनाना नहीं भूलता है। जब हम कहते हैं कि हम लोगों का प्यार से स्वागत करते हैं तो यह सिर्फ बच्चों के लिए उपयुक्त व्यवहार या बॉडी लैंग्वेज नहीं है, बल्कि मानवाधिकारों के आधार पर हर बच्चे को समझना और समान अवसर का स्थान बनाना है। सच्ची समावेशिता पुस्तकालय के लिए एक विजन से शुरू होती है। यह दृष्टि छोटे और बड़े रूप में दिखाई देनी चाहिए - पुस्तकालय में बाल सुरक्षा, खुली शेल्फ की विविधसंग्रह और पाठक के साथ पुस्तकालय के दैनिक अभ्यास के बारे में एक बैनर या पोस्टर जो सचेत रूप से शक्ति संरचनाओं को तोड़ता है।

आज के समय में पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जो आज भी हमारे लोगों के लिए यह देखने है कि एक सच्चा समावेशी, लोकतांत्रिक स्थान कैसा दिखना चाहिए। तो क्यों न सभी का स्वागत प्यार से करें**?** इस पर ज़रूर विचार करे।

रितुपर्णा, प्रोजेक्ट कीटापे कथा कोई

कोर ग्रुप सदस्य, फ्री लाइब्रेरीज नेटवर्क

22 जून

हम हैं एफ.एल.एन !

एफ.एल.एन सदस्य फ्री पुस्तकालयों के निर्माण, संचालन और प्रचार के लिए काम करते हैं जो जाति, वर्ग, धर्म, लिंग और यौन पहचान या विकलांगता के पूर्वाग्रह के बिना सभी का स्वागत करते हैं। हम सभी के लिए पुस्तकों तक मुफ्त पहुंच सुनिश्चित करने और नए पाठकों बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, जिनके पास शायद स्वयं ऐसा करने का साधन अभी नहीं है।

वेबसाइट- **https://www.fln.org.in/**।

ट्विटर: **@FreeLibNetwork**

इंस्टा: **@freelibrariesnetworkfln**

फेसबुक:

https://www.facebook.com/freelibrariesnetworkFLN

ईमेल:

freelibrariesnetworkfln@gmail.com

और पुस्तक वितरण के लिए:**booksforallFLN@gmail.com**

एफ. एल. एन कार्यक्रम और कार्यशालाएं

सोशल मीडिया वर्कशॉप 2 अप्रैल 2022

ह कार्यशाला बांसा कम्युनिटी लाइब्रेरी द्वारा संचालित किया गया और इसमें **10** पुस्तकालय सदस्यों ने भाग लिया। बांसा से जतिन ललित सिंह और एफ. एल. एन से पूर्णिमा राव ने सोशल मीडिया आउटरीच और सेल्फ-डॉक्यूमेंटेशन के लाभों पर प्रकाश डाला। शुरुआत में सबको कार्यशाला से मनचाहे परिणाम के बारे में सोचने का समय दिया गया। प्रैक्टिकल एक्सरसाइज जैसे कि मॉडल पोस्ट बनाने से सदस्यों को अपने कौशल का अभ्यास करने में मदद मिली, और साथ ही में फीडबैक भी मिला।

सदस्यों ने एक-दूसरे की आवाज़ को बढ़ावा देने के तरीको पर चर्चा की। सत्र में साइबर अपराधों की जानकारी सहित प्लेटफार्मों पर सुरक्षा और प्राइवेसी जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं को शामिल किया गया। इस सेशन में सभी ने जाना की सोशल मीडिया एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है जिसको सही तरह से उपयोग करके हम दुनिया को अपने बारे में बता सकते हैं और साथ ही हम ने अमेज़न विशलिस्ट जैसे अलग अलग सोशल मीडिया टूल्स के उपयोग के बारे में सीखा।

अधिक जानकारी के लिए जतिन से **Jatinlalit@bansacommunitylibrary.com** पर संपर्क करें ।

पब्लिशर्स कनेक्ट | तूलिका बुक्स -14 मई 22

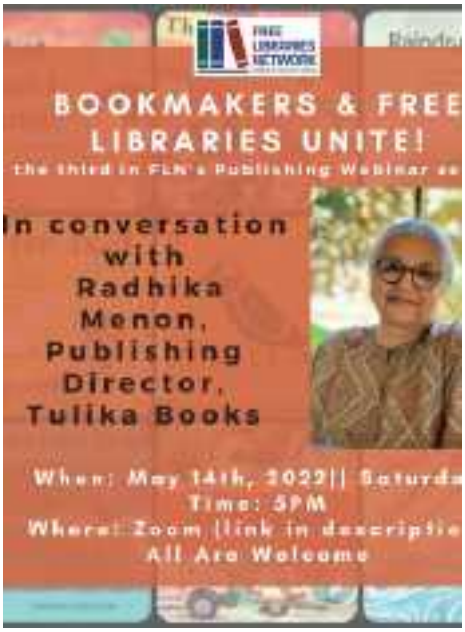

इस सत्र में **60** से अधिक प्रतिभागियों के साथ, राधिका मेनन **(**प्रकाशन निदेशक, तुलिका**)**, दीपा नायर **(**वरिष्ठ संपादक**)** और तिलक **(**सेल्स**)** ने एफ.एल.एन सदस्यों से **9** भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन की उनकी **26** साल की यात्रा और भारत में पुस्तकालयों के साथ उनके जुड़ाव के बारे में बात की। वेबिनार का उद्देश्य प्रकाशन परिदृश्य को समझना और प्रकाशकों के साथ फ्री पुस्तकालय आंदोलन में हितधारकों के रूप में संबंध बनाना था।

कई पुस्तकालय-प्रैक्टिशनर्स ने तुलिका किताबों के रीड अलाउड करने के अपने अनुभव बताए और इसी के साथ उन्होंने तूलिका किताबों की लोकप्रियता और कठिन मुद्दों पर किताबों द्वारा, पाठकों के साथ बात-चीत करने के अनुभव के बारे में भी बताय। लाइब्रेरी मेंबर्स ने प्रश्नोत्तर सत्र में तुलिका को पढ़ने की संस्कृति के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया और किताबों में उनको और क्या शामिल करना चाहिए, इसके बारे में बातचीत की। जैसे कि भारत में कई समुदायों की जीवित वास्तविकताओं के वास्तविक प्रतिबिंब की कमी को पूरा करना चाहिए।

sविशिष्ट भाषाओं में कुछ शीर्षकों की अनुपलब्धता और पुस्तकों का स्टॉक से बाहर होना भी प्रतिभागियों की एक सामान्य चिंता थी। भारत में विभिन्न भाषाओं में पुस्तकों की आवश्यकता और निरंतर मांग के बावजूद, तुलिका पुस्तकों ने लागत, पुनर्मुद्रण को प्रकाशित करने में तकनीकी कठिनाइयों, कई अनुवादों की आवश्यकता को बाधाओं के रूप में उद्धृत किया जो उन्हें इन मांगों को पूरी तरह से पूरा करने से रोकती हैं। यह स्पष्ट है कि प्रकाशकों के साथ-साथ पुस्तकालय प्रैक्टिशनर्स को इस अंतर को कम करने पर चिंतन करने और सभी के लिए पुस्तकों तक पहुंच और पढ़ने के सामान्य लक्ष्य पर सहयोग करते हुए साहित्य में समावेशिता की दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

अन्य एफ. एल. एनसमाचार

एफ.एल.एन एक पंजीकृत सोसायटी है

2 जून **22** से, फ्री लाइब्रेरी नेटवर्क एफ.एल.एन - एक पंजीकृत सोसायटी है। एफ.एल.एन की एक कानूनी पहचान है और अब वह एक संगठन के रूप में प्रकाशकों, सरकारों और अन्य हितधारकों से बात कर सकता है। बेशक, एफ.एल.एन के पास अब अनुपालन की जिम्मेदारियां भी होंगी। पहली जनरल मीटिंग के विवरण के लिए यह स्थान और व्हाट्सएप ग्रुप देखे।

एफ.एल.एन में चर्चा

फ.एल.एन एक दूसरे से, राज्य सरकारों से और अन्य हितधारकों के साथ बातचीत में शामिल होकर फ्री पुस्तकालयों और एक मजबूत सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली की वकालत करता रहा है। एफ.एल.एन पुस्तकालय आंदोलनों में सभी मंचों का उपयोग "फ्री" पर जोर देने और पुस्तकालय पाठ्यक्रम के विचार को पेश करने के लिए कर रहा है।एफ.एल.एन के सदस्य-पुस्तकालयों की सफलता की कहानियां दर्शाती हैं कि कम्युनिटी ओनरशिप कैसे काम करती है। पिछली तिमाही में से कुछ प्रयास:

- एजुकेशन साउथ एशिया सेमिनार सीरीज: साउथ एशियाई स्टडीज और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित एक सेमिनार में, पूर्णिमा राव (एफ.एल.एन कोर ग्रूपन सदस्य)) ने एफ.एल.एन का प्रतिनिधित्व किया और पहली पीढ़ी के पाठकों के लिए विशेष चुनौतियों पर अपने पुस्तकालयों से अपने अनुभवों को साझा किया और इसी के साथ एफ.एल.एन ने भारत और दक्षिण एशिया से नए पुस्तकालय मित्र भी बनाए।
- महाराष्ट्र और कर्नाटक नीति और कानून: एफ.एल.एन ने इन राज्यों के सार्वजनिक पुस्तकालय संस्थानों और पुस्तकालय कानूनों को मजबूत करने के लिए विधि सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च द्वारा आयोजित दो राउंडटेबल चर्चाओं में भाग लिया। बंसा कम्युनिटी लाइब्रेरी, रीडिंग स्टार्स इंडिया, हादीबाड़ी जैसे एफ.एल.एन पुस्तकालयों ने कर्नाटक सत्र में भाग लिया, जबकि पूर्णिमा राव (एफ.एल.एन कोर ग्रुप मेंबर) ने महाराष्ट्र में एफ.एल.एन सामूहिक का प्रतिनिधित्व किया और संपन्न पुस्तकालयों को बनाने के लिए क्या ज़रूरी है और क्या काम नहीं आता इन सब विषयों पर अपने अनुभवों को शेयर किया। सार्वजनिक पुस्तकालय नीति के लिए कम्युनिटी ओनरशिप (या भागीदारी) और फ्री पहुंच को सबसे आगे रखने का आग्रह किया। इन सत्रों में पुस्तकालयाध्यक्षों को समर्थन की कमी, इंटरनेट असमानता और नौकरशाही प्रक्रियाओं से भरे वातावरण मे और देश में डिजिटल पुस्तकालयों में एकतरफा और अत्यधिक निवेश को सार्वजनिक पुस्तकालय व्यवस्था को सुलभ होने से रोकने का खुलासा भी किया गया एवं उस पर चर्चा हुई।
- ग्राम पंचायत पुस्तकालय और सूचना केंद्र, कर्नाटक: स्कूल फॉर डेमोक्रेसी (एस.एफ.डी), दी कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट (टी.सी.एल.पी) और पूर्णिमा राव (एफ.एल.एन कोर ग्रुप मेंबर), पंचायती राज विभाग, कर्नाटक की प्रधान सचिव, सुश्री उमा महादेवन के साथ परामर्श का हिस्सा थे। एफ.एल.एन ने ग्राम पंचायत पुस्तकालयों को मजबूत करने के लिए कई सुझाव व अपने अनुभव प्रस्तुत किए। परामर्शी दस्तावेज़ मे समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए आधारभूत मानकों को रेखांकित किया, पुस्तकालय सेवाओं के अर्थ को व्यापक बनाने में मदद की और सामुदायिक भागीदारी की वकालत की।
- युवा संवाद: नेशनल अलायंस ऑफ पीपल्स मूवमेंट्स (एन.ए.पी.एम) द्वारा 'सीखने के स्थान के रूप में' यूथ लेड कम्युनिटी लाइब्रेरीज पर आयोजित एक सत्र में, सीमांचल लाइब्रेरी फाउंडेशन, प्रोजेक्ट कीटापे कथा कोई, एस.एफ.डी और टी.सी.एल.पी ने लोकतंत्र को मजबूत करने और समानता के हमारे मौलिक अधिकार में फ्री पुस्तकालयों की भूमिका पर चर्चा की।

बुक्स फॉर ऑल प्रोग्राम

'बुक्स फॉर ऑल' **(**बी.एफ.ए**)** प्रोग्राम एफ.एल.एन सदस्य-पुस्तकालयों को मुफ्त डाक खर्च के साथ निशुल्क किताबें भेजता है। **2019** में शुरू होने के बाद से अब तक इस प्रोग्राम ने मेंबर पुस्तकालयों को **12,000** से अधिक किताबें भेजी हैं। इस कार्यक्रम का नेतृत्व एफ.एल.एन कोर ग्रुप के सदस्य- कुटुम्ब फाउंडेशन **(**किस्सागढ़**)** और द कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट कर रहे हैं। एफ.एल.एन पुस्तकों को एकत्र करने के लिए भारतीय प्रकाशकों के साथ-साथ व्यक्तिगत पुस्तक दाताओं के साथ अपने संबंधों का लाभ उठाता है। इन पुस्तकों को काफी ख़याल करके क्यूरेट किया जाता है **(**भाषा, विषयवस्तु, औसत पुस्तकालय उपयोगकर्ता की आयु के आधार पर**)** और तो और अधिकतर किताबें बिल्कुल नई होती हैं। प्रत्येक लाभार्थी-पुस्तकालय **80-100** शीर्षकों या **1-2** बुक बॉक्स के हकदार हैं **(**उपयुक्त शीर्षकों की उपलब्धता के आधार पर**)** । यह किताबें उन्हें मुफ्त में भेजी जा सकती हैं या पुस्तकालय सदस्य हमारे कार्यलय खिरकी, नई दिल्ली में जाकर पुस्तकों का चयन कर सकते हैं और उन्हें ले जा सकते हैं। संपर्क : विपिन **(**कार्यक्रम प्रभारी**)** अधिक जानकारी के लिए **booksforallfln@gmail.com** पर आप ईमेल कर सकते हैं।

एफ.एल.एन मीट अप: 7-8 मई, 2022

असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर के **15** से अधिक सदस्यों के साथ एफ.एल.एन उत्तर पूर्व में सबसे मजबूत है। **7** मई, **2022** को पूर्णिमा और सुमित **(**दिल्ली से एफ.एल.एन प्रतिनिधि**)** और ऋतुपर्णा **(**एफ.एल.एन प्रतिनिधि, असम**)** ने गुवाहाटी और नलबाड़ी जिलों में **4** पुस्तकालयों की यात्रा की और शहरी और ग्रामीण परिवेश में सामुदायिक पुस्तकालयों की स्तिथि का अवलोकन किया। प्रतिनिधि मंडल ने गुवाहाटी में स्नेहजोरी पुस्तकालय के साथ-साथ नलबाड़ी में बुनियाद, प्रेरणा और सामन्य पुथिभूराल का दौरा किया साथ ही यह भी देखा कि विभिन्न मॉडल कैसे संचालित होते हैं। मंडल ने पुस्तकालय प्रलेखन प्रथाओं, पुस्तक-क्यूरेशन, पठन सेवाओं और पुस्तकालयों द्वारा संचालित सांस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन किया और बहुत कुछ सीखा। असम के समुदाय के स्वामित्व वाले पुस्तकालयों के इर्द-गिर्द जुड़ाव का एक गहरा इतिहास है और कई गाँव अपने स्पेस को क्राउडफंड करते हैं, और एक स्वतंत्र पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखते हैं।

8 मई को गुवाहाटी में एफ.एल.एन सदस्य-पुस्तकालयों के नौ प्रतिनिधियों की बैठक हुई। पहली बार व्यक्तिगत रूप से मिलना, यह हमारे एकजुटता के बंधन को सीखने और मजबूत करने का एक जबरदस्त अवसर था। एनईईटी कम्युनिटी लाइब्रेरी में आयोजित यह बैठक जिसमें, एफ.एल.एन सदस्यों ने अलग मुद्दों पे बात की, जिनमे शामिल हैं कि मॉडल लाइब्रेरी कैसे बनती है, कैसे रीड अलाउड किया जाता है, कैसे स्वागत करने वाली प्रथाएं सदस्यों को लाइब्रेरी से अपनापन और लगाव महसूस कराती हैं, और हम सभी एफ.एल.एन में क्षेत्रीय एकजुटता कैसे बढ़ा सकते हैं। बैठक एक बुक एक्सचेंज, एवं क्षेत्र और देश भर में ज़्यादा से ज़्यादा बैठकें आयोजित करने के दृढ़ संकल्प के साथ समाप्त हुई।

सदस्य पुस्तकालयों पर स्पॉटलाइट

फ्री लाइब्रेरी नेटवर्क के कुछ सदस्यों का परिचय। हमारे एफ.एल.एन पुस्तकालयों के बारे में अधिक जानने के लिए कृपया यह कॉलम देखें

हेमेन सरमा के साथ बातचीत| असम के नलबाड़ी जिले के बत्सर गाँव में **बुनियाद पुथिभरल,** जुलाई 2019 में लगभग 100 सदस्यों के साथ स्थापित एक परिसंचारी पुस्तकालय है। पाठक जुड़ाव: हेमेन सरमा ने महसूस किया कि सक्रिय और नियमित आउटरीच आवश्यक है। वे एक्सटेम्पोर स्पीकिंग, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं और विजेताओं को पुरस्कार दिया जाता है। समावेशन का अर्थ है: एक ऐसा स्थान होना जहाँ सभी का स्वागत हो। वर्तमान में पुस्तकालय को एक चुनौती का सामना करना पड़ रहा है जहां माइनॉरिटी कम्युनिटी के छात्र आने से हिचकिचा रहे हैं। हेमेन ने उन तक पहुंचने और उन्हें रोकने वाली बाधाओं को समझके उन्हें शामिल करने की योजना बनाई है, और वह अल्पसंख्यक समुदायों के सम्मानित सदस्यों को पुस्तकालय के चैंपियन बनाने का प्लान कर रहे हैं। स्टैंड आउट लाइब्रेरी मोमेंट: यह सीखना कि मामूली शुल्क भी एक प्रवेश बाधा है। नेटवर्क पावर: एफ.एल.एन का हिस्सा होने से हेमेन को समान विचारधारा वाले साथियों के साथ बातचीत करने और संबंधित कहानियों को जानने ने में मदद मिली है। वह चाहते हैं कि एफ.एल.एन क्षेत्रीय प्रकाशकों के बीच जागरूकता बढ़ाने पर काम करे और असमिया सहित स्थानीय भाषा में पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ाने में मदद करे।

बुनियाद पुथिभरल में शीर्ष 3 पुस्तकें

इस पुस्तकालय के पाठकों के बीच असमिया लोक कथाएँ बहुत लोकप्रिय हैं। उनकी शीर्ष 3 पसंद हैं: **(क) बूढ़ी एयर साधु** (शाब्दिक रूप से दादी की कहानियों में अनुवाद) लक्ष्मीनाथ बेज़ बरुआ द्वारा संकलित **(ख) जिबोनीमुलोक ग्रोंथो**- प्रसिद्ध / प्रमुख व्यक्तियों की आत्मकथाएं **(ग) असीमत जार हेरल सीमा** (उपन्यास- जिन्होंने अनंत तक अपनी सीमा खो दी) कंचन बरुआ द्वारा

बुनियाद पुथिभरल, गांव और पी.ओ. बत्सोर, जिला: नलबाड़ी, असम, पिन-781303 ईमेल: hemen12sarma@gmail.com

सबा दवे के साथ बातचीत | **स्कूल फॉर डेमोक्रेसी (एस.एफ.डी)** या लोकतंत्रशाला, लोकतंत्र की समझ को बढ़ावा देने और गहरा करने के लिए समर्पित एक संगठन है जो की गांव-देवडुंगरी, थाना, कालादेह, खीमाखेड़ा, बींद का बड़िया, काया भीला, जोधगढ़ , और भीम - भीलवाड़ा, राजस्थान के पाली और राजसमंद जिलों मे काम करता है । 2017 में स्थापित और डेमोक्रेसी एंड कॉन्स्टीट्यूशनल वैल्यू फेलोशिप के हिस्से के रूप में, समुदाय के युवा इन पुस्तकालयों को चलाते हैं। कुछ पुस्तकालय फिजिकल स्ट्रक्चर में हैं, जबकि अन्य पुस्तकालय, साथियों के आंगन और छतों से संचालित होते हैं। वे वर्तमान में दिन में 2-3 घंटे खुले रहते हैं और लगभग 350 बच्चे यहां आते है। **पाठक जुड़ाव:** एस.एफ.डी ने मोबिलाइजेशन ड्राइव, माता-पिता के साथ बातचीत, एम.के.एस.एस और राजस्थान असंगथित मजदूर यूनियन (आर.ए.एम.यू) जैसे सहयोगियों का लाभ उठाने जैसी रणनीतियों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को जोड़ने की चुनौती को संबोधित किया है। सबा का मानना है कि जब समुदाय वास्तव में मानता है कि पुस्तकालय एक सुरक्षित स्थान है और समानता, न्याय, बंधुत्व और करुणा के मूल्यों के आसपास केंद्रित एक बड़ी दुनिया के लिए एक खिड़की प्रदान करता है, तो वे एंगेज करेंगे।

समावेशन का अर्थ है: एस.एफ.डी अवसर मिलने पर लिंग, धर्म, भेदभाव पर असहज बातचीत करने से नहीं हिचकिचाता। ये बातचीत कार्यशालाओं, कहानियों, गीतों आदि के माध्यम से होती है। एस.एफ.डी कुछ समुदायों को दूर रखने वाली भौतिक बाधाओं को तोड़ने के लिए अधिक दूरस्थ क्षेत्रों में पुस्तकालयों खोलने की योजना बना रहा है। **स्टैंड आउट लाइब्रेरी मोमेंट**: प्रेम और सद्भाव के नारे लगाते युवा सदस्य। यही सदस्य बंटवारे को बढ़ावा देने वाले साम्प्रदायिक नारे लगाते थे। वह गलत सोच को पीछे धकेल रहे हैं, पूछताछ कर रहे हैं और यहां तक कि अपने माता-पिता/समुदाय के लोगो को शिक्षित भी कर रहे हैं। नेटवर्क पावर: पुस्तकों, बुनियादी ढांचे और पुस्तकालय प्रथाओं पर अन्य पुस्तकालयों से मार्गदर्शन। एस.एफ.डी चाहता है कि एफ.एल.एन बड़ी चुनौतियों पे काम करे, जैसे की राज्य के साथ मिलके हर पंचायत में एक मुफ्त सार्वजनिक पुस्तकालय नेटवर्क बनाने के लिए ज़ोर दे।.

एस.एफ.डी पुस्तकालयों में शीर्ष 3 पुस्तकें

एस.एफ.डी पुस्तकालय के बच्चों को प्रथम, एकलव्य और कथा की किताबें पसंद हैं। हालांकि प्रत्येक पुस्तकालय के अपने विशेष पसंदीदा हैं, उनके सभी में से ३ सबसे पसंद के शीर्षक है: **क) बूँदों की सवारी,** अंजलि वैद द्वारा और शायन मुखर्जी द्वारा सचित्र, **ख) आच्छू**, दीपा बलसावर द्वारा और नैन्सी राज द्वारा सचित्र, **ग) गिजिगाडु और समयबद्ध जुगनू,** गोपिनी करुणाकर द्वारा और अतनु रॉय द्वारा सचित्र

स्कूल फॉर डेमोक्रेसी वेबसाइट: https://schoolfordemocracy.org फेसबुक: https://www.facebook.com/loktantrashala/ इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/sfd_community_libraries/ ईमेल: loktantrashala@gmail.com और पुस्तकालयों के लिए: उमा - uma.sfd@gmail.com

शशबिंदु शाह के साथ बातचीत| सी.के.एस फाउंडेशन, संरक्षण, ज्ञान और सेवा के लिए समर्पित एक गैर सरकारी संगठन, उत्तराखंड में दो पुस्तकालयों का संचालन करता है, एक चंद्रनगर में (2014 में स्थापित) और दूसरा पोखरी में (2021 में स्थापित)। पुस्तकालय में 250 बच्चे और किशोर आते है। **पाठक जुड़ाव**: गेम्स, एक्टिविटीज और पुस्तकों का एक क्यूरेटेड और विविध संग्रह युवा पाठकों को पुस्तकालय में वापस लाता रहता है। पुस्तकालय का भौतिक स्थान- स्कूल और बाजार क्षेत्र के पास पुस्तकालय को जीवंत बनाने में मदद करता है।

माता-पिता बच्चों को यहां छोड़ने में सहज महसूस करते हैं। **समावेशन का अर्थ है:** शशबिंदू के लिए समावेश का अर्थ है कि सभी पुस्तकालय का उपयोग करने और विचारों और विचारों को साझा करने के लिए स्वतंत्र हैं। लाइब्रेरियन यह विचार दिखाने के लिए ध्यान भी रखते हैं कि सभी का स्वागत हो। **स्टैंड आउट लाइब्रेरी मोमेंट**: रीड अलाउड सेशन, जब कहानियाँ बच्चों के साथ जीवंत हो जाए। बच्चे लाइब्रेरियन के साथ काफी सहज महसूस करते हैं और वे कहानियों से जुड़े अपने जीवन के अनुभव उनके साथ साझा करते हैं। **नेटवर्क पावर:** एक ट्राइब ढूँढना। आयोजित ट्रेनिंग और कार्यशालाओं से उन्हें पुस्तकालय प्रथाओं पर संदेहों और प्रश्नों के उत्तर खोजने में मदद मिलती है। शशबिंदू चाहेंगे कि एफ.एल.एन सभी तक पढ़ने के अधिकार का संदेश फैलाए।

सी.के.एस में शीर्ष 3 पुस्तकें

इस पुस्तकालय में, बच्चे अपनी कहानियों से प्यार करते हैं और लगभग सभी कुछ पढ़कर खुश होते हैं। शीर्ष 3 पिक्स हैं: **क) श्रुति फ्लोट्स ऐन आईडिया**, नविन दुरैराजु द्वारा और विभा सूर्यनारायण द्वारा सचित्र **ख) लेट्स गो सीड कलेक्टिंग,** नेहा सुमित्रन द्वारा और अर्चना श्रीनिवासन द्वारा चित्रित किया गया **ग) उन्नी की विश,** मेरिल गाज़िया द्वारा और फहद फैज़ल द्वारा सचित्र।

सीकेएस फाउंडेशन वेबसाइट: https://cksfoundation.in/ Facebook: @FoundationCKS इंस्टा:@cks foundation ईमेल: contact@cksfoundation.in

ऑस्टिन मोबली के साथ बातचीत| किस्सागढ़ एक्टिव लाइब्रेरी 2014 में स्थापित यह दिल्ली में 3 पुस्तकालयों का संचालन करती है- जिनमे शामिल है नोएडा, सवदा-घेवरा जे.जे. रीसेटलमेंट कॉलोनी, और निजामुद्दीन सुंदर नर्सरी बस्ती। यह 250 मेंबर्स आते हैं, जिनमें ज्यादातर बच्चे हैं। **पाठक जुड़ाव:** लक्षित पठन और भाषा सत्र जो शुरुआती पाठकों को रेगुलर पाठक बनने में मदद करते हैं। एक सक्रिय बुकक्लब कार्यक्रम चर्चा को प्रोत्साहित करता है। नाटक और कला मेंबर्स को काफी आकर्षित करते हैं।

समावेशन का अर्थ है: एक नाटक और कला संगठन (कुटुम्ब फाउंडेशन) का हिस्सा, एक्टिविटीज़, विशेष रूप से प्रदर्शन पुस्तकालय का एक बड़ा हिस्सा हैं। प्रदर्शन पुस्तकालय में शक्ति संरचनाओं और महान्तशाही की प्रथा को तोड़ने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। सहकर्मी नेतृत्व- पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय प्रबंधकों में शामिल करना भी समावेशिता को बढ़ावा देता है। **स्टैंड आउट लाइब्रेरी मोमेंट:** एक कहानी मनोरंजन के दौरान (पुस्तक 'वेयर दी वाइल्ड थिंग्स आर'- जिसमें एक छोटा बच्चा मैक्स घर छोड़ देता है), पुस्तकालय के सदस्यों ने पुस्तकालय में वस्तुओं के साथ पुस्तक में दिए गए मैक्स के कमरे को फिर से बनाया। उन्होंने पात्रों की प्रेरणा पर सवाल उठाया, कहानी को पाठ से परे आयाम देते हुए कई आख्यान बनाए। **नेटवर्क पावर:** एफ.एल.एन ने फ्री पुस्तकालयों के विभिन्न मॉडलों का प्रदर्शन किया है। क्विसेगढ़ बुक्स-फॉर-ऑल प्रोग्राम का हिस्सा है और मानता है कि लाइब्रेरी को सपोर्ट करने के लिए बुक डिस्ट्रीब्यूशन जरूरी है। ऑस्टिन एफ.एल.एन को फ्री पुस्तकालय आंदोलन की वकालत करना जारी रखना चाहता है और संसाधन साझा करने के लिए एक मंच बनना चाहता है।

किस्सागढ़ पर शीर्ष 3 पुस्तकें

उनकी शीर्ष 3 पसंद हैं: **क) ओ हरिलाल पेड** (एकलव्य टीम रानू टाइटस द्वारा सचित्र) **ख) चांद पर खरगोश** (इंद्राणी कृष्णियर इलस्ट्रेटर: हर्षा नागराजू) **ग) एनुअल हेयरकट डे** (रोहिणी नीलेकणी, एंजी और उपेश द्वारा चित्रित)

किस्सागढ़ एक्टिव पुस्तकालय डी-77, तीसरी मंजिल, सेक्टर 10, नोएडा वेबसाइट: https://kutumb.in/qissagadh-active-library/ ईमेल: austin@kutumb.in sushma@kutumb.in। फेसबुक: https://m.facebook.com/kutumbfoundation

सिर्फ एक सवाल

पुस्तकालय प्रैक्टिशनर्स, एडुकेटर्स और फसिलिटेटर्स के रूप में सोचने के लिए समावेशिता पर एक प्रतिबिंब।

क्या मेरी लाइब्रेरी में हर कोई उम्र, जाति, धर्म, साक्षरता और आर्थिक स्थिति, लिंग और यौन पहचान, विकलांगता आदि की परवाह किए बिना स्वागतमय व सहज महसूस करता है**?**

क्या मेरे पुस्तकालय के सदस्य ओनरशिप महसूस करते हैं अर्थात क्या वे स्पेस और इसमें कराये जाने वाले कार्यक्रमों से अपनी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को स्वतंत्र तौर पर व्यक्त कर सकते हैं**?**

मेरा पुस्तकालय सबसे संवेदनशील**(**जाति, धर्म, लिंग और यौन पहचान, आर्थिक स्थिति, साक्षरता, विकलांगता आदि के आधार पर**)** सदस्यों की जरूरतों और आकांक्षाओं को कैसे पूरा करता है**?**